भागवत कथा मंगलाचरण

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

वंशी विभूषितकरान् नवनीरदाभात् पीताम्बरादरुणबिंबफलाधरोष्ठात् । पूर्णेंदुसुंदरमुखादरविंदनेत्रात्

कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥१॥

मैं किसी भी सत्य को नहीं जानता जो कृष्ण से उच्चा हो, जिस के हाथो को बहुत चाहा गया हैं एक बाँसुरी से, जिस का रंग एक वर्षामेघ की तरह हैं, जो एक पीला कपड़ा पहनता हैं, जिस के होठ एक लाल बिम्बा फल जैसे हैं, जिस का चहरा पूर्णिमा जैसा सुंदर हैं और जिस की आँखे कमलों जैसी हैं ॥१॥

कृष्णत्वदीयपदपङ्कजपञ्जरांते अद्यैव मे विशतु मानस राजहंसः ।
प्राणप्रयाणसमये कफवात- पित्तैः कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते ॥२॥

अरे श्री कृष्ण, इसी क्षण मेरे मन के उस राजहंस को आपके चरणो के कमल के उलझे हुए जड़ो में प्रवेश करने दो । मृत्यु के समय आपको स्मरण करना मेरे लिए कैसे मुमकिन होगा, जब मेरा गला बलगम, पित्त और वायु से घुट जायेगा ? ॥२॥

धुन

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

स्तुति

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय सुर्यकोटिसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा ॥१॥

हे वक्रतुण्ड! (टेढ़ी सूँढवाले) विशाल शरीर वाले, करोड़ो सूर्य के समान देदीव्यमान देव! मुझे आप सभी कार्यों में सदा के लिए निर्विघ्न कीजिए ॥१॥

भागवत कथा मंगलाचरण

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे ।
तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः ॥२॥

सच्चिदानन्दस्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण को हम नमस्कार करते हैं, जो जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश के हेतु तथा आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक- तीनों प्रकार के तापों का नाश करने वाले हैं ॥२॥

वासनात् वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥३॥

जिसकी सत्ता भाव से ही तीनों भुवन सुवासित हैं, सभी प्राणियों के हृदय में जिनका निवास हैं; ऐसे भगवान् वासुदेव श्रीकृष्ण को नमस्कार हो! ॥३॥

नमोऽस्तुते व्यास विशाल बुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र ।
येन त्वया भारत-तैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः ॥४॥

हे खिले हुये कमल-पत्र के समान नेत्र वाले, विशाल बुद्धि व्यासजी! आपने जो महाभारत रूपी तेल से पूर्ण ज्ञानमय प्रज्ञा-दीप प्रज्वलित किया, आपको नमस्कार हैं ॥४॥

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ।
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुः तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ॥५॥

जिस समय श्रीशुकदेव जी का यज्ञोपवीत- संस्कार भी नहीं हुआ था, सुतयं लौकिक -वैदिक कर्मों के अनुष्ठान का अवसर नहीं आया था, उन्हें अकेले ही सन्यास लेने के उद्देश्य से जाते देखकर उनके पिता व्यासजी विरह से कातर होकर पुकारने लगे- 'बेटा! बेटा!' उस समय तन्मय होने के कारण श्रीशुकदेवजी की ओर से वृक्षों ने उत्तर दिया। ऐसे सबके हृदय में विराजमान श्रीशुकदेव मुनि को मैं नमस्कार करता हूँ ॥५॥

भागवत कथा मंगलाचरण

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा, या श्वेतपद्मासना॥
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥६॥

जो कुन्द के फूल, चन्द्रमा बर्फ और घर के समान श्वेत हैं, जो शुभ्र कपड़े पहनती हैं, जिनके हाथ उत्तम वीणा से सुशोभित हैं, जो श्वेत कमलासन पर बैठती हैं, ब्रह्मा विष्णु महेश आदि द्वेव जिनकी सदा स्तुति करते हैं और जो सब प्रकार की जड़ता हर लेती हैं, वे भगवती सरस्वती मेरा पालन करें ॥६॥

योऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां ।
संजीवयत्यखिलशक्तिधरः स्वधाम्ना ॥
अन्याँश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन् ।
प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम् ॥७॥

प्रभो! आप सर्वशक्तिसम्पन्न हैं; आप ही मेरे अन्तःकरण में प्रवेश कर अपने तेज से मेरी इस सोयी हुई वाणी को सजीव करते हैं; हाथ, पैर, कान और त्वचा आदि अन्यान्य इन्द्रियों एवं प्राणोँ को भी चेतनता देते हैं। मैं आप अन्तर्यामी भगवान् को प्रणाम करता हूँ ॥७॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥८॥

गुरु ही ब्रह्मा हैं; गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही शिव हैं, गुरु ही साक्षात् परमात्मा हैं।
उन श्रीगुरु को नमस्कार हैं ॥८॥

गोविंद दामोदर स्तोत्र

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटेशयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥१॥

जो अपने चरणकमलों से अपने चरणारविन्द को मुख-कमल में डाल रहे हैं और जो वट वृक्ष के पत्ते के पुट पर शयन कर रहे हैं, ऐसे बालमुकुन्द को मैं मन से स्मरण करता हूँ ॥१॥

श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविंद दामोदर माधवेति ॥२॥

हे जिह्वे! तू श्रीकृष्ण! गोविन्द! हरे! मुरारे! हे नाथ! नारायण! वासुदेव! तथा गोविन्द! दामोदर! माधव! इस नामामृत का ही निरन्तर प्रेमपूर्वक पान करती रह ॥२॥

विक्रेतुकामाखिलगोपकन्या मुरारिपादार्पितचितवृत्तिः ।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद् गोविंद दामोदर माधवेति ॥३॥

जिनकी चित्तवृत्ति मुरारि के चरणकमलों में लगी हुई हैं, वे सभी गोपकन्याएँ दूध-दही बेचने की इच्छा से घर से चलीं। उनका मन तो मुरारि के पास था; अतः प्रेमवश सुध-बुध भूल जाने के कारण 'दही लो दही' इसके स्थान पर जोर-जोर से 'गोविन्द! दामोदर! मधव! आदि पुकारने लगीं ॥३॥

गृहे गृहे गोपवधूकदम्बा : सर्वे मिलित्वा समवाप्य योगम्।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं गोविंद दामोदर माधवेति ॥४॥

व्रज के प्रत्येक घर में गोपकन्याएँ एकत्र होने का अवसर पाने पर झुंड- की झुंड आपस में मिलकर उन मनमोहन माधव के 'गोविन्द, दामोदर, माधव' इन पवित्र नामों को पढ़ा करती हैं ॥४॥

भागवत कथा मंगलाचरण

सुखं शयाना निलये निजेऽपि नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्याः ।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति गोविंद दामोदर माधवेति ॥५॥

अपने घर में ही सुख से शय्या पर शयन करते हुए भी जो लोग 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' इन विष्णुभगवान् के पवित्र नामों को निरन्तर कहते रहते हैं, वे निश्चय ही भगवान् की तन्मयता प्राप्त कर लेते हैं ॥५॥

जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि।
समस्त भक्तार्तिविनाशनानि गोविन्द दामोदर माधवेति ॥६॥

हे जिह्वे! तू सदा ही श्रीकृष्णचंद्र के 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन मनोहर मञ्जुल नामों को, जो भक्तों के समस्त संकटो की निवृत्ति करने वाले हैं, भजती रह ॥६॥

सुखावसाने इदमेव सारं दुखावसाने: इदमेव ज्ञेयम् ।
देहावसाने इदमेव जाप्यं, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥७॥

सुख के अन्त में यही सार हैं, दुःख के अन्त में यही गाने योग्य हैं और शरीर का अंत होने के समय भी यही मंत्र जपने योग्य हैं, कौन-सा मंत्र? यही कि 'हे गोविन्द! हे दामोदर!
हे माधव!' ॥७॥

श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति ॥८॥

हे जिह्वे! तू 'श्रीकृष्णा! राधारमण! व्रजराज! गोपाल! गोवर्धन! नाथ! विष्णो! गोविन्द! दामोदर! माधव!' इस नामामृत का निरन्तर पान करती रह ॥८॥

स्तुति

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम् ।
सर्वाङ्गे हरि चन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावलि
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥१॥

जिन के ललाट पर कस्तूरी का तिलक शोभायमान है एव□ वक्षःस्थल पर कौस्तुभ मणि विद्यमान है, नासिका के अग्रभाग पर मोती शोभायमान है, सम्पूर्ण श्रीअ□ग में चंदन सुशोभित है, क□ठ में सुन्दर मोती की माला है और जो भक्तिमयी गोपवधू से घिरे हुए है ऐसे परम कमनीय गोपाल श्री कृष्ण विजयी हो रहे है ॥१॥

अस्ति स्वस्तरुणीकराग्रविगलत्कल्पप्रसूनाप्लुतं
वस्तु प्रस्तुतवेणुनादलहरीनिर्वाणनिर्व्याकुलम् ॥
स्रस्तस्रस्तनिबद्धनीविविलसद् गोपीसहस्रावृतं
हस्तन्यस्तनतापवर्गमखिलोदारं किशोराकृतिः ॥२॥

वृजेश्वर, रासेश्वर, आनन्दघन परब्रहम श्री कृष्ण जिनकी अनुपम वेणुनाद लहरी साक्षा□त् मोक्ष है, अहो! जिनके कर कमल उदारतापूर्वक अपवर्ग (मोक्ष) को प्रदान करने मे॑ तत्पर है॑ ।
वे अनिवर्चनीय दिव्य प्रेमस्वरूपिणी गोपिकाओ से परिवेष्ठित अदभूत अवाङगमनसगोचर किशोराकृति प्रियतम नीलमणि श्यामसुन्दर श्री कृष्णचन्द्र है ॥२॥

कृष्णं नारायणं वंदे कृष्णं वंदे व्रजप्रियम् ।

कृष्णं द्वैपायनं वंदे कृष्णं वंदे पृथासुतम् ॥

सच्चिदानंद स्वरूप श्री नारायण हरि वही साक्षात् कृष्ण है - उसको वंदन । व्रजमंडल के प्रियतम् भगवान श्री कृष्ण को वंदन। कृष्ण द्वैपायन (वेद व्यास) को वंदन। नर (पृथासुत - अर्जुन) नारायण को वंदन ॥